

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमः ॥ अथोपनिषत् ॥ तेषां कर्मानामहं विद्युः सतीहं क
रु ॥ ॐ नमः ॥ सर्वसूतनद्यावत् महायजुर्हं कुरु ॥ ॐ नमो वासुदेवाय ॥ अजिह्वं अयं अजिह्वं वध्वा कलि
नग्नं सामलिहं कुरु ॥ ॐ नमः ॥ विषया
नु सणी मात्रिणि सयनदिनीयना
माहणीहं कुरु ॥ ॐ नमो वासुदेवाय ॥
यथा ॥ यार्तं गुरुतं २ यार्तं ॥ किं किं ॥ विविदिणीधनं २ वडहस्यसायद २ वद्वगकयालवाविनी
महायिहितमीसासनी मानुखान्यावृत्तं सानिधनं वसिष्ठामात्रा यद्वित्तं विनी सूरतिसीनह

चर्यानेयविशेषन कृमियाचमितासूत्र ॥ यथामात्रवर्गं रम्यं भक्तसिंहनगायिना । मथामाल
 वलीजित्वा मधुलंलखिकामादं ॥ सायेयैकियगामित्युक्ता नमेवलीनेचिकयम् ॥ नभावजवधः
 मूडया ॥ डं वजी सवदं डं वजी वधनमि यमकाले डं कावविशये ज्ञानसोमनी वंजी सव
 विगाय ॥ डं वजी निष्ठं ३ ॥ धर्मगुन मधुलसंश्रुभिष्ठानयाय ॥ ॐ निवसुधानाधि
 वासनविधि ॥ ॥ मधुलदाग ॥ नवधनकी अष्टद्वयप्रवाय मुनिसकलग
 धूययादाव लखधन यचनत्त यचविदि । यथाधधि ॥ धूमद्वयम् । अद्वयान्दिसि कृष्णक
 मलिसंश्रुकाय सुका सखिन गजस मयक ॥ डं वजी निखनलूयन् दिभावध २६ ॥ धर्म

३

दानिन नंगत्त कनभायविनीलवर्गसंस्त्राय ॥ गावना ॥ य. ली. व. द. व. वीजनिष्ठनाग ॥ वं. औ
 डीखी डं जान वेगावन मत्तसंरवामितारा भाद्यसिद्धि कायवृथान्धत्वा ॥ नशानिवमिनः
 यचनथागमदत्तसूर्यका नादिकूननं ॥ ॥ गेशज ॥ कावज योगेचतुस्रयस्ववृथान चक्र
 यो ॥ डं दी फट् गम क गिज ॥ यडुमयवः ॥ ॥ वज्रय काकवेल यादी फट् घा कृ गेनेवाक
 स्रववरे कूनन ॥ गेशमदे कावगास्तगाः ॥ विचिन्ना ॥ आ. या. ॥ डं वं वज विरु समय ॥ ॥
 ॥ गिमनंगस्य ॥ ॥ डं आ ॥ वजीवी ॥ १०८ ॥ योग ॥ ॥ डं डी वजीवी ॥ १०८ ॥ वका ॥ ॥
 डं खवजिची ॥ १०८ ॥ दविन ॥ ॥ डं डं वजीवी ॥ १०८ ॥ नीव ॥ ॥ सद्योवमिकमकुलः

मवृजं न म्रिष्टान् ॥ यं ला दी सु त ॥ जैका भिवा गत न ॥ ॥ मूलाचार्य ॥ ऊँ श्रावण द ह नू नू क
४ ॥ कर्म ॥ ऊँ खलु बाह दै रू ट ॥ ज वा न जयी म वंड सूर्य स्व नू प च कु द थ डैं दो फ द छी क गि उ
०० लू वाये वायो रु न सा ध क स्या लशः ॥ द्वयं नास्य स्वस्य संघो न न व श धा मन का ना सी न
वीनु मरिची कु ॥ डैं वज द विम डि नि ॥ सि नी कृत्य ॥ डैं अ आ औ म्र १ स्वा दा ॥ सुगभिषा
न ॥ निमत्या लि मा मूला वा यो १ ॥ ०० ग ॥ न सि मा रु न सा ध क १ ॥ सू ग द ल ॥ डैं न्या न्या नू ग
गा १ सर्वे धर्मा १ डैं यज स्य ना नू ग गा १ सर्वे धर्मा १ ॥ डैं अत्य ना नू ग गा १ सर्वे धर्मा १ ॥ डैं आ १ दै ॥ सु ग
य न न विधि १ ॥ ॥ न ग म क विग न म ल ल स यू य या ग क म ल (म म ल ल श र्ज डाम ल ल या म ल

वक्रधा ॥ ४ ॥ कान्तो यीतावशा सो वदुस्त्यो ध्यात्वा ॥ वक्रयदनतमूर्ति वाममुखि नागदित्वा नाशो ध
प्रथम ॥ नमस्कृतसाधकं तथा गृहीतमूर्ति ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ यथन दाययत् ॥ गृहीता चित्तथा यष्टिमे मूल
युक्ते कर्म ४ दकिने मूल ॥ उक्तयकर्म ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ नाशिस
समन ॥ आकाशसूत्रनिधाय ॥ वक्रसू
सधाय ॥ वाकदित्य ॥ वलि ॥ यी ॥ ला ॥ घ
गथत् ॥ ४ ॥ वक्रसू ४ विसर्जन ॥ सूत्रयागनविधि ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ नाशिस
लथउत्कीनय ॥ सर्वे किलान् वक्रधमास्त्या ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ नाशिस
लथ ॥ यीवलदन समयाद्यन ॥

स्वकनवजप्रियान्नविशाय ॥ यं. ला. र्चं. ॥ मञ्जुलसद्वदाय ॥ धर्मो धारुल यं शुद्धं सर्वसत्त्वयुभाय क
 ॥ स्वयं वज्रप्रभायाजा सर्वनाथगताय यी । सर्वदा ये विनिमूर्कं चक्राय न न सीलित ॥ ॐ ह्युक्ता मञ्जु
 लदा नमो वादाव ॥ ॐ भानकानस स्वव
 ॥ ॐ आ ॥ ॐ ॥ वलि । यं. ला. र्चं. मु. न. ॥ ॐ
 या नन विमि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ धनलि रु
 निमं भज ज्ञा ॥ ॐ वज्र सु न ग र्व ॥ ॐ ह्यभन नियात्य यथा ह्यभन निवभयत् ॥ मञ्जुलार्चि रुव
 या किन न धव धव धायस् मदाचर्क वाय कीलननार्चि यवदभाय नाय वाय ॥ पूर्वग ॥ ॐ नुस

१